॥ ॐ श्री नकलंग देव ॥

श्री अनूप स्वामीजी

जीवन-दर्शन

प्रकाशक :
श्री अनूप मण्डल सेवा समिति राजस्थान
मुख्यालय जाखोड़ा
सहयोग : समस्त अनूप मण्डल

श्री अनूप मण्डल सेवा समिति, राजस्थान
श्री अनूप स्वामी
अनूप जीवन-दर्शन

जगत उद्धारक रहस्य, दृष्टा, निष्कलंक परमात्मा।
विश्व कल्याणर्थ लोके अवतरित श्री अनूपस्वामिने नमोनमः ॥

विंश्व शान्ति के मार्ग दर्शक, साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक- पुरुष युगावतार परम पुज्य सदा स्मरणीय श्री अनूप स्वामी निष्कलंक अवतार के जीवन दर्शन को शब्दों में अभिव्यक्त करना सागर को चम्मच से नापने का प्रयास है।परन्तु वर्तमान समय में अनूप स्वामीजी के जीवन एवं संदेश के बारे में व्याप्त भ्रान्तियों के निवारण हेतु कुछ लिखना सार्थक, प्रासंगिक एवं परमावश्यक है।

श्री अनूप स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ला चतुर्दशी संवत् 1905 को रावणा राजपूत क्षत्रीय कुल में एक साधारण परिवार में पाली जिले के एक छोटे से गांव बांगडी में हुआ था। बांगडी गांव राष्ट्रीय राजमार्ग 14 पर स्थित

कस्बे साण्डेराव से 3 किलोमीटर दूर स्थित है। श्री अनूप स्वामी का बचपन का नाम श्री ओखसिंह था। उनके पिता का नाम श्री हीरासिंहजी एवं माता का नाम जेतादे था। उनकी गौत्र चौहान एवं उपगौत्र (नख) मादरेसा थी। उनके भक्त श्री हरिचंद सोनी ने लिखा है-

साख चौहान अनूपदास, नख मादरेसा जाण।
पिता तो हीरासिंहजी, मात्ता करू बखाण।
माता करू बखाण, जैत माँ गोद खिलाया।
पाया अमृत दूध, धर्म का मंगल गाया।
कहे सोनी हरिचंद, सदूगुरु कंचन मोती खाण।
साख चौहान अनूपदास, नख मादरेसा जाण।

श्री ओखसिंहजी को उनके माता पिता किसी प्रकार की विद्यालय शिक्षा या अक्षर ज्ञान नहीं करा सके। श्री ओखसिंह के भाईयों का नाम श्री भीमसिंह एवं श्री किशन सिंह था। उनके माता पिता ने बचपन में ही उनको जीविकापार्जन के लिये भेजा। वे गांव की गाये चराते थे।

श्री ओखसिंहजी दयालु, भावुक एवं अत्यन्त संवेदनशील प्रकृति के थे। गायों के साथ उनके बछड़े भी चराते थे। जब भूख से व्याकुल बछड़े अपनी माताओं के पास जाते एवं स्तनपान करते तो वे करूणावश उन्हें नहीं रोक सके। गांव वालों की शिकायते आयी एवं उन्हें यह कार्य छोड़ना पड़ा। उनके माता पिता ने उन्हें अल्पायु में ही कमाने के लिए बाहर भेजा। उन्होने गढ सिवाणा रियासत में अल्प समयावधि तक नौकरी की। परन्तु उनका चित किसी भी सांसारिक क्रियाकलाप में नहीं लगता था। वे हमेशा सोचा करते थे कि संसार में दुःख क्यो है ? लोगों की बुद्धि भ्रष्ट क्यों हो रही है?धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते है? भूकंप, सूखा, अकाल, हिमपात, अत्यन्त गर्मी, अत्यन्त सर्दी, असामयिक मृत्यु, महामारी, विभिन्न बिमारियां क्यों फैलती है? परमात्मा क्या है?परमात्मा को कैसे जाना जा सकता है?एवं सृष्टि सर्जक परमात्मा अपनी रचना को दुःख क्यों दे रहा है ?

ऐसे पारमार्थिक विचारों से ओतप्रोत व्यक्तित्व सांसारिक मोहमाया वें प्रलोभन नहीं बांध सके। उन दिनों गढ सिवाणा के जंगल में सिद्ध योगी श्री भवानीनाथजी महाराज विराजे हुये थे। श्री ओखसिंहजी उनके दर्शन के लिये गये, उन्होंने योगीराज भवानीनाथ के चरणों मे श्रद्धा से शीष झुकाया एवं ब्रह्वेत्ता अन्तर्दृष्टा ऋषि श्री भवानीनाथ ने नतमस्तक श्री ओखसिंह के भीतर अवस्थित अवतारी पुरुष को योग शक्ति से जान लिया। उन्हें ज्ञात हुआ कि समय समीप है जब निष्कलंक अवतार अपना जगतहित मिशन आरंभ करने वाले है। श्री ओखसिंह के कमर पर बंधे चमड़े के पट्टे को देखकर श्री भवानीनाथ योगी बोले - ऐ बालक तूने यह चमड़े का पट्टा क्यो लगाया है। तूने तो अपने जगत् का अमर पट्टा लिखाया है।

श्री ओखसिंह को सिद्ध भवानीनाथ के श्री चरणों में अपूर्व शांति एवं आनंद का अनुभव हुआ।

उनका मन संसार से पूर्णत विरक्त हो गया। न नौकरी में मन लगा न घर में। परमात्मा की दिव्य सत्ता का अनुभव करना एवं संसार के सभी दुःखों एवं पीड़ाओं के कारणों का जानना उन्होंने अपने जीवन का मुख्य ध्येय बनाया। वे अपने गांव बांगडी आये। माताजी से अनुमति ली, घर त्याग दिया, नौकरी छोड़ दी। उन्होंने बारह वर्ष तक कठोर तपस्या की। परमात्मा की खोज में वे आबू, आडावला, गुजरात व मालवा के पहाड़ों मे घूमते थे। वे पेड़ों से स्वतः गिरे पत्तों एवं फूलों का आहार करते थे। कभी कभी भूखे प्यासे कई दिन निकल जाते थे। वे यदा कदा पहाड़ों के समीपवर्ती गांवो में आते एवं मेहनत मजदूरी करके झाडु, बुहारू लगाके अपना पेट भरते थे। उनका जीवन सरभंगी की तरह हो गया था। 12 वर्ष की कठो तपस्या के फलस्वरूप उन्हें परमज्ञान का अनुभव हुआ। ब्रह्मज्ञान में आकंठ डुबे श्री स्वामी ने कुछ भजनों एवं साखियों की रचना की जो कि आज भी श्रद्धालु

भाविकों द्वारा प्रेम से गायी जाती है। आत्मा एवं परमात्मा के बोध के बाद उन्हे अनूपस्वामी एवं अनूपदासजी के नाम से पुकारा जाने लगा।

परन्तु श्री अनूप स्वामीजी ने परमात्मा-अनुभव व ब्रह्मज्ञान तक ही अपनी साधना को सीमित नहीं रखा। उन्हें हमेशा यह दुःख बना रहता था कि संसार के सभी प्राणी विभिन्न पीड़ाये क्यों झेल रहे है। समस्त जड़ चेतन को प्रकृति क्यों दुःख देती है। ब्रह्मानंद में आकंठ डूबे श्री अनूप स्वामी महाराज को जीवन की युवावस्था में एक विचित्र एवं भयानक अनुभव हुआ जिसने उनके जीवन को झकझोर दिया। उन्होंने अपने तपोबल से जाना कि परमात्मा की इस विचित्र रचना में ध्यान, भक्ति योग जैसे ब्रह्मानुभव के मार्ग है तो इसके विपरीत कुछ ऐसी भी क्रियाएँ है जो प्रकृति के संतुलन को डावाडोल करती है। उन्होंने अपने तपोबल से जाना कि परमात्मा किसी जीव को पीड़ा नहीं देता एवं प्रकृति का संतुलन स्वतः

डावाडोल नहीं होता। उन्होंने तांत्रिक यातना से पीड़ित होकर विश्व के भले के लिए एक अभूतपूर्व संदेश दिया जो कि साररूप में अधोलिखित है।

''पृथ्वी पर सुदीर्घ काल से राक्षस विद्या का पाप किसी टापू पर चल रहा है। पाप करने वाले तांत्रिकों ने उस जगह को तंत्रबल से अदृश्य एवं अगम्य बना दिया है। वहाँ विभिन्न रक्तकुण्डों में यज्ञ हवन, पशुबलि, नरबलि, होम, जाप, आहुति एवं तांत्रिक अनुष्ठान बड़े पैमाने पर चल रहे है। यह राक्षस विद्या का पाप रावण हिरण्यकश्यप, कंस एवं कारून बादशाह ने भी चलाया था एवं इसी पाप से अकाल, सूखा, भूकम्प, तूफान, हिमपात, अत्यन्त गर्मी, अत्यन्त सर्दी, विभिन्न बिमारियाँ असामयिक मृत्यु, महामारी, (हैजा, प्लेग, एड्स (वर्तमान में) आदि फैलते है। उन्होंने अपने जीवन के 40 वर्ष इसी अनुभव को जग जाहिर करने में लगाये। उन्होंने कहा कि इन विपदाओं को आज तक परमात्मा

की लीला एवं प्रकृति का प्रकोप माना जाता रहा है, लेकिन मैं अनुभव कर रहा हुँ कि यह सब राक्षस विद्या का कुपरिणाम है। राक्षस विद्या के पाप से ही लोगों की बुद्धि भ्रष्ट हुई है एवं हो रही है, राक्षस विद्या के पाप से नास्त्रेयडेमस जैसे भविष्य वक्ताओं की भविष्य वाणियां जो कि सभी विश्वविनाश, खून-खराबा, नरसंहार व बुरे होने के सम्बन्ध में है वे सही हो जाती है, एवं समय रहते मानव सजग नहीं हुआ तो समूचे विश्व में मायावी, तांत्रिक शक्तियों का प्रभुत्व व शासन होगा व समूचा विश्व तबाह हो जायेगा। उन्होंने अपने अनुभव से पाप करने वालों को पहचाना एवं कहा कि राक्षस विद्या का पाप करने वाले लोग लोग दिखाऊ धर्म पुण्य करते है। जीवों की रक्षा करते है एवं धर्मात्मा बने फिरते है लेकिन गुप्त में पाप ही पाप करा रहे है जैसा रावण भी लोगों की नज़र में धर्मात्मा व तपस्वी बना फिरता था। उन्होंने अपनी पुस्तक में पाप कराने वाले विश्व विनाशकों के लिए राक्षस,

काफिर, सौदागर, महाजन, बनिये, एवं जादूगर जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।''

श्री अनूप स्वामी के जीवन में कई चम्कारं पूर्ण घटनाएं घटी। यथा गांव बालोतरा मे मृतगाय का हाथ के स्पर्श मात्र से जीवित होना, बालोतरा में ही अंधे सेवक द्वारा नेत्र ज्योति प्राप्त करना, गांव पादरू इलाका सिवाणा में ठाकुर के आदमी का मना करने पर भी स्नान करना, जहां गाये पानी पी रही थी एवं वह होद में तेल मेट साबुन लगाकर नहा रहा था, आज्ञा न मानने पर वह स्नान करके निकला व कोढी हो गया एवं अनूप स्वामी के नाम का प्रसाद बोलने पर पुनः ठीक हो गया। गांव चोटिला इलाका पाली में आर्शीवाद से एक दम्पत्ति के संतान हुई जो कि 25 वर्ष से विवाहित थे एवं बेऔलाद थे।

ये सभी परचे एवं चम्तकार आज भी लोग श्रद्धा भाव से याद करते है एवं कुछ लोग आज भी जीवित है जिनके जीवनकाल में ये चमत्कार घटित हुए थे। ये सब घटनायें